BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

भारत में पुनर्जागरण आंदोलन: कारण, प्रमुख विशेषताएं एवं ऐतिहासिक महत्व

डॉ. उमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
बिनोद बिहारी महतो विवि, धनबाद
जितेन्द्र कुमार
शोधार्थी,
नेट-जे.आर.एफ
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
बिनोद बिहारी महतो विवि, धनबाद

सारांश

भारत में पुनर्जागरण आंदोलन 19वीं शताब्दी में सामाजिक और बौद्धिक सुधार के रूप में उभरा, जिसने परंपरागत सोच को चुनौती दी और प्रगतिशील विचारों को बढ़ावा दिया। ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रसार ने समाज में जागरूकता पैदा की। इस दौर में व्याप्त जातिवाद, अंधविश्वास, बाल विवाह, सती प्रथा और महिलाओं की अशिक्षा जैसी कुरीतियों के खिलाफ सुधारवादी प्रयास तेज हुए। भारतीय पुनर्जागरण ने न केवल सामाजिक बदलाव को प्रेरित किया बल्कि आत्मसम्मान और नए विचारों के प्रति स्वीकृति को भी बढ़ाया। पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव ने तर्कशीलता और आधुनिकता को प्रोत्साहित किया, जिससे समाज सुधारकों को अपने विचार रखने का मंच मिला। राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना कर सती प्रथा के उन्मूलन और विधवा पुनर्विवाह को समर्थन दिया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया, जबकि दयानंद सरस्वती ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता के महत्व को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। इन सुधारकों के प्रयासों से ब्रह्म समाज, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन जैसी संस्थाएँ बनीं, जिन्होंने समाज में नई सोच को बढ़ावा दिया। इतिहास की दृष्टि से यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा स्रोत बना। सामाजिक सुधारों ने राष्ट्रीय जागरूकता को बल दिया और देश को औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त करने की दिशा में बड़ा कदम साबित हुआ। साहित्य, कला और विज्ञान में नवाचार हुए, जिससे आधुनिक भारत के निर्माण की नींव पड़ी। भारतीय पुनर्जागरण केवल सुधारों तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय पुनरुत्थान और सांस्कृतिक उत्थान का प्रतीक बन गया।

कुंजी शब्द: भारत, पुनर्जागरण आंदोलन, राजा राम मोहन राय

❖ परिचय

18वीं शताब्दी के मध्य का भारत राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बहुत नीचे स्तर पर था। देश की राजनीतिक स्थिति डांवाडोल थी। मुगल सम्राट औरंगजेब की संकुचित तथा अंधविश्वास पूर्ण नीतियों के फलस्वरूप मुगल साम्राज्य का द्रुत गति से पतन हो रहा था। उसके आयोग्य उत्तराधिकारियों के नेतृत्व में साम्राज्य के पतन की गति और भी तीव्र हो गयी। न केवल साम्राज्य की एकता जाती रहीं अपितु उसकी सीमा भी सीमित होती गई। बंगाल तथा बिहार में मुगल साम्राज्य के गवर्नरों नवाब ने अपने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। मध्य भारत में मराठे अभी तक अपनी शक्ति का संचय करने में समर्थ थे, वे लूटमार का धंधा क्या करते थे। शिवाजी का अनुशासन उन पर अब नहीं था। वह राजनीतिक एकता जो कि भारत में मुगलों के

@2025 Bihar Shodh Samaagam

काल में कायम थी नष्ट हो गई थी और पुरानी जनजातियों तथा जातियों के प्रधान स्थानीय सरदार तथा महत्वाकांक्षी सैनिक सत्ता के लिए आपाधापी कर रहे थे ऐसे भी घटन के दिनों में ईस्ट इंडिया कंपनी के सेवकों तथा अभिकर्ताओं ने व्यापार करने की अपेक्षा राजनीतिक सत्ता का उपयोग करना अधिक लाभप्रद माना। लॉर्ड क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स तथा लॉर्ड वेलेजली सरीखे महत्वाकांक्षी और सिद्धांतहीन शासकों ने विघटित स्थिति का पूर्ण लाभ उठाते हुए भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की आधारशिला रख दी। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारत ने राजनीतिक दृष्टिकोण से अंग्रेजों की अधिक कुशल कूटनीति तथा धूर्त ई व्यवहार के सामने सिर झुका लिया। आर्थिक नजरिए से भारत दरिद्र होता जा रहा था। कंपनी कब्जा करती जा रही थी और भारत का धन बहता हुआ यूरोप पहुँच रहा था[1]

भारत के आर्थिक शोषण और बढ़ती दरिद्रता की चर्चा समाचार पत्र और नेता कर रहे थे एक समाचार पत्र ने छापा "भारतीय अपनी जीवन शक्ति खो चुका है वह अपना प्राण तत्व नष्ट कर चुका है। उसका रक्त चूस लिया गया है और अर्थनीति की दृष्टि से देखा जाए तो वह वास्तव में हड्डियों का ढांचा मात्र होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह आधा भूखा है कोमा आधा "" है। ऐसे चावल और बहुत से कंदमूल तथा पौधों के पत्ते हैं। कमी भी स्वादिष्ट भोजन का आनंद नहीं लिया। चिथड़े मात्र है। एक टूटी फूटी झोपड़ी मात्र है, जो मौसम के कष्टों से उसकी रक्षा ही नहीं कर पाती"[2] मराठी साप्ताहिक केसरी में शिवाजी ट्रेन्स इस नामक एक पद प्रकाशित हुआ जिसमे शिवाजी ब्रिटिश शासन के अंतर्गत देश की दुर्दशा पर इस प्रकार से शिकायत करते हुए दिखाए गए हैं- हाय। यह कैसा विनाश का तांडव नृत्य है। यह मैं अपनी आँखों से देश की बिना सलीला को देख रहा हूँ,,,,,,, समृद्धि समाप्त हो चुकी है और उसके बाद स्वास्थ्य भी पूर्णब्रह्म देश में दुर्भाग्य का दानव सारे देश को अकाल के शिकंजे में जकड़े हुए हैं।[3]

इसी प्रकार कुछ राष्ट्र नेताओं ने देश की आर्थिक स्थिति का चित्र खींचा और उस पर पश्चताप किया श्री दादाभाई नौरोजी ने 1871 में ही लिखा देश निरंतर दरिद्र था पंगु बनता जा रहा है। [4] "भारत कई प्रकार से गंभीर रूप से विपिन है और दरिद्रता में दबा हुआ है।"[5]

नरोजी ने 1895 में लिखा "भारत भूखा मर रहा है अपर्याप्त भोजन पर रहने को बिग बॉस है भारतवासी धक्के से हल्के से धक्के से मरने की स्थिति में है"[6] दो0अंग्रेज भी भारत की आर्थिक दुर्व्यवस्था का उल्लेख करते हैं। सर डब्ल्यू हंटर लिखते हैं भारत की 40,00,00,000 जनता अपर्याप्त भोजन पर जीवन निर्वाह करती है सर चार्ल्स अलॉट के शब्दों में "मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आधि खेतीहर जनता पूरे के पूरे वर्ष के बीतने पर भी एक बार भरपेट भोजन नहीं कर पाती।"[7] संक्षेप में आर्थिक दृष्टि से अंग्रेजी शासन का परिणाम निराशाजनक ही नहीं था अपितु हानिकारक भी था। व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया था गृह उद्योगों को विनिष्ट कर इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात किया था और कृषि का वाणिज्यीकरण करके नकदी धन के उपार्जन का उपाय ढूंढ निकाला था। इन सबका परिणाम था भारत में बढ़ती गरीबी और दुर्भाग्य झोंका गंभीर प्रकोप।

सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टियों से भी भारत की स् थिति कम सोचनीय नहीं थी। भारत के लोग उपनिषदों और वेदांत के सत्य तथा संदेश को भुलाकर निष्प्राण तथा अंधविश्वास पूर्ण कर्मकांड ओके दलदल में फंस गए थे। हिंदुओं ने एक परमात्मा के स्थान पर असंख्य देवी देवताओं की उपासना आरंभ कर दी। नहीं रकार ब्रह्मा का स्थान एक निष्क्रिय कोटि की मूर्ति पूजा ने ले लिया था। नहीं अब ईसाई धर्म का विस्तार भी देश में हो रहा है। देश को सौधर्म की, राष्ट्रीय धर्म की आवश्यकता थी।[8] सती, बलात् वध्य, अस्पृश्यता, मनुष्यों की हत्या तथा एक कठोर जाति व्यवस्था ने जो कि हजारों जातियों और उपजातियों को मान्यता दे दी थी, खूब सर्वथा खोखला कर दिया था। बहुविवाह की प्रथा मुसलमानों और हिंदुओं दोनों में प्रचलित थी। दोनों ने पर्दा प्रथा को भी अपना लिया था। समाज में निम्न वर्ग के लोगों की स्थिति तो और भी दयनीय थी। नारियों की स् थिति और भी बुरी हो गई थी। समाज में

उनकी पहले सी प्रतिष्ठा नहीं थी। से शिक्षा एवं प्रगति की बातों से उनका संपर्क टूट गया था। का बड़ा स्पष्ट चित्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इन शब्दों में खींचा है- अपनी सत्ता के आंतरिक, सत्य के साथ अपने संबंधों का वि छेद करके और परिस्थितियों की पतित दासता के गड्ढे में पड़ा हुआ हमारा देश अविवेक के कुचल देने वाले भार के नीचे दबा हुआ था। सामाजिक प्रथाओं में राजनीति में धर्म तथा कला के क्षेत्र में, हाँ स्वभाव यह सृजनात्मक हो गया था हम हर सोनू मुख परम्पराओं के फंदी में जकड़े पड़े थे और हमने अपनी मानवता का प्रयोग करना छोड़ दिया था।[9] इस काल में भारत ने सृजनात्मक शक्ति खो दिया था। साहित्य और कला की प्रगति रुक गई थी पोल बि राम आदर्श नैतिकता अपना दम तोड़ रही थी। पश्चिमी सभ्यता के चकाचैंध में पड़कर भारतीय अपनी भारतीयता और धर्म भूलते जा रहे थे। द्र सेन ने लिखा है "आज हम अपने चारों ओर जो देखते है वह है एक गिरा हुआ राष्ट्र एक ऐसा राष्ट्र जिनकी प्राचीन महानता खंडहरों में गड़ी हुई पड़ी है। आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन उसका उद्योग और वाणिज्य, और गृहस्थीसादगी और मधुरता ऐसी हैं जिनकी गिनती लगभग अतीत की वस्तुओं में की जाती है।जब हम आध्यात्मिक, सामाजिक और बौद्धिक दृष्टि से उजड़े हुए सोक युक्त और उदासीन दृश्य जो हमारे सामने फैला हुआ है का निरीक्षण करते है तो हम व्यर्थ ही उसमें काली दास के देश कविता, विज्ञान और सभ्यता के देश को पहचानने का प्रयत्न करते हैं। थिओडोर से लिखा है की प्रधानता आर्थिक लाभ के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने ब्रिटिश राज्य की स्थापना की और उसका विस्तार किया।

निश्चित रूप से भारत का प्रत्येक स्थल पर पतन हो रहा था स्ट्रेस फ्री और इसने अपनी सृजनात्मक शक्ति का विनाश कर दिया था। इसे भारत का अंधकार युग कहना एकदम उचित होगा पर इसका हमें यह अर्थ नहीं समझ लेना चाहिए कि भारत की आत्मा मर गई थी वह केवल अचेत अवस्था में पड़ गई थी पुन विराम लगाते जागृत देश। की विश्व के अनेक आधुनिक देशों पर जब सभ्यता की छाया भी नहीं पड़ी थी भारत में सभ्यता और संस्कृति चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी जिसके कारण यह देश विश्व का गुरु कहलाता था[11] किंतु विदेशी शासन ने इसकी सारी अच्छाइयों को समाप्त कर दिया और भारत की आत्मा अचेत अवस्था में पड़ गयी। उचित और जागृत करने के लिये एक आघात की आवश्यकता थी। ब्यापार हेतु भारत में यूरोपीयनों के आगमन तथा ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा राजनीतिक सत्ता हस्तगत कर लेने के फलस्वरूप भारत पश्चिम की सबल सभ्यता के संपर्क में आया। पश्चात सभ्यता का प्रभाव तथा ईसाई धर्म प्रचारकों का कार्यकलाप व आघात सिद्ध हुए जिसने कि सुसुप्तावस्था मैं पड़ी हुई भारत की आत्मा को जागृत कर दिया। जीवन शक्ति की सीजन्स शीलता का यह प्रस्फुटन पुनर्जागरण कहलाता है।

❖ **भारत में पुर्नजारण के कारण:**

भारत में पुनर्जागरण के प्रमुख कारण कई थे, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक बदलावों से जुड़े थे। यहां कुछ महत्वपूर्ण कारण दिए गए है-

- **ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रभाव** - ब्रिटिश शासन ने भारत में पश्चिमी शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। इसके कारण भारतीय समाज में नए विचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, और प्रबुद्धता का प्रसार हुआ। भारतीय समाज को पश्चिमी लोकतांत्रिक मूल्यों, स्वतंत्रता, और समानता के बारे में जानकारी मिली।
- **पश्चिमी शिक्षा और साहित्य** - भारतीय समाज में पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव बढ़ा, जिससे भारतीयों को नई सोच और दृष्टिकोण मिला। शिक्षित वर्ग में यूरोपीय दर्शन, साहित्य, और विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ी, जिसने भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में मदद की।
- **धार्मिक सुधार आंदोलन** - 19वीं शताब्दी में धार्मिक सुधार आंदोलनों का उभार हुआ, जैसे राजा राममोहन रॉय द्वारा ब्राह्मो समाज की स्थापना, स्वामी विवेकानंद का रामकृष्ण परमहंस के विचारों का प्रसार, और अन्य सुधारकों द्वारा हिंदू धर्म में

व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष। इन आंदोलनों ने धार्मिक अंधविश्वास और कुरीतियों को समाप्त करने की दिशा में योगदान दिया।

- **भारत में सांस्कृतिक जागरण** - पुनर्जागरण ने भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक धरोहर, कला, साहित्य और इतिहास की ओर पुनः जागरूक किया। भारतीय भाषा, साहित्य और कला के क्षेत्रों में नई ऊर्जा और रचनात्मकता का संचार हुआ।
- **औद्योगिकीकरण और विज्ञान में प्रगति** - औद्योगिक क्रांति और विज्ञान में प्रगति ने भारतीय समाज में नवाचार और विकास के लिए एक नया मार्ग खोला। भारतीय समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार हुआ और पारंपरिक दृष्टिकोण को चुनौती दी गई।
- **राष्ट्रीयता का उदय** - भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम ने भारतीयों में राष्ट्रीय पहचान और एकता की भावना को जागरूक किया। इसने समाज में बदलाव और सुधार की आवश्यकता को महसूस कराया।
- **समाजवादी और मानवाधिकार विचार** - समाजवादी विचारधारा और मानवाधिकार की अवधारणा ने भारतीय समाज को नारी सशक्तिकरण, जातिवाद उन्मूलन और सामाजिक न्याय की दिशा में प्रेरित किया।

❖ **भारत में पुनर्जागरण की विशेषताएँ**

- **धार्मिक सुधार** - पुनर्जागरण के दौरान भारतीय समाज में धर्म के प्रति सोच में बदलाव आया। धार्मिक सुधारकों ने धर्म में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया। राजा राममोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, और ज्योतिबा फुले जैसे सुधारकों ने सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दिया और धार्मिक तर्कवाद को प्रोत्साहित किया।
- **सामाजिक सुधार और समानता** - भारतीय पुनर्जागरण ने समाज में सुधार की दिशा में कदम बढ़ाए, जैसे कि बाल विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, और महिलाओं के अधिकारों पर जोर दिया। महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए आंदोलन किए गए। रानी दुर्गावती, दीनानाथ वर्मा, और ब्रह्मो समाज ने महिलाओं के शिक्षा और उत्थान पर ध्यान दिया।
- **शिक्षा का प्रसार** - भारतीय पुनर्जागरण में शिक्षा को एक प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय समाज में नई सोच का जन्म हुआ। राजा राममोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, और महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्तित्वों ने शिक्षा के महत्व को समझाया और इसका प्रसार किया।
- **सांस्कृतिक पुनर्निर्माण** - पुनर्जागरण के समय भारतीय साहित्य, कला, और संस्कृति में एक नया प्रोत्साहन आया। भारतीय कलाकारों और साहित्यकारों ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और उसे पुनर्जीवित करने का काम किया। रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर) और विवेकानंद जैसे विचारकों ने भारतीय संस्कृति की महानता का प्रसार किया।
- **वैज्ञानिक और तर्कवादी** - दृष्टिकोण पुनर्जागरण ने भारतीय समाज में वैज्ञानिक सोच और तर्कवाद को प्रोत्साहित किया। यह समय था जब भारतीय समाज ने पारंपरिक अंधविश्वास और अंधश्रद्धा को चुनौती दी। ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले और स्वामी विवेकानंद जैसे समाज सुधारकों ने तर्क और विज्ञान को समाज सुधार में शामिल किया।
- **राष्ट्रीयता का जागरण** - भारतीय पुनर्जागरण ने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना को जागरूक किया। समाज के विभिन्न वर्गों में देशभक्ति और एकता का माहौल बना। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव था, जो ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति की ओर अग्रसर हुआ।

- **पश्चिमी प्रभाव और भारतीयता का मिश्रण** - भारतीय पुनर्जागरण में पश्चिमी विचारों और भारतीय संस्कृति का मिश्रण हुआ। पश्चिमी शिक्षा, साहित्य, और विचारधारा ने भारतीय समाज में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। लेकिन इसने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को भी संरक्षित रखने की आवश्यकता को महसूस किया।
- **नारी सशक्तिकरण** - महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा, शिक्षा, और समानता की दिशा में कई आंदोलन शुरू हुए। महिलाओं के लिए शिक्षा के द्वार खोले गए, और उन्हें समाज में समान स्थान देने की कोशिश की गई। सारदा देवी और कमला देवी जैसी महिलाएं समाज में परिवर्तन की लहर लेकर आईं।

❖ **ऐतिहासिक महत्त्व**

भारत में पुनर्जागरण का महत्व अत्यधिक था, क्योंकि इसने भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण बदलावों का मार्ग प्रशस्त किया। यहां कुछ प्रमुख कारण दिए गए हैं जो भारत में पुनर्जागरण की महत्ता को दर्शाते है।

- **सामाजिक सुधार** - पुनर्जागरण के दौरान भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद, सती प्रथा, बाल विवाह और महिलाओं के प्रति भेदभाव जैसी कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया गया। राजा राममोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और अन्य सुधारकों ने समाज में सुधार की दिशा में काम किया, जिससे समाज में अधिक समानता और न्याय की भावना जागृत हुई।
- **धार्मिक जागरूकता** - पुनर्जागरण ने भारतीय समाज में धर्म के प्रति जागरूकता और प्रगति का मार्ग खोला। धार्मिक विचारधाराओं को तार्किक दृष्टिकोण से देखा गया और कई धर्म सुधारक जैसे राममोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, और महात्मा गांधी ने समाज में धर्म का सही अर्थ और उद्देश्य प्रस्तुत किया। इसने धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया।
- **महिलाओं का सशक्तिकरण** - पुनर्जागरण ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सामाजिक स्थान में सुधार की आवश्यकता को महसूस कराया। महिलाओं की शिक्षा, अधिकार, और समानता के लिए कई आंदोलनों की शुरुआत हुई। विशेष रूप से, सत्यशोधक समाज और ब्राह्मो समाज ने महिलाओं के उत्थान के लिए कई कदम उठाए।
- **शिक्षा का प्रसार** - पुनर्जागरण के दौरान शिक्षा का महत्व बढ़ा और भारतीय समाज में शिक्षा की नींव मजबूत हुई। इसके परिणामस्वरूप भारतीयों को पश्चिमी विज्ञान, गणित, दर्शन, और साहित्य के बारे में जानकारी मिली। साथ ही, भारतीय भाषाओं में भी साहित्य और ज्ञान का संचार हुआ।
- **राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम** - पुनर्जागरण के दौरान भारत में राष्ट्रीयता की भावना जागी। भारतीय जनता ने अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए संघर्ष करना शुरू किया। यह भावना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव थी, जो अंततः भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करने में सफल रहा।
- **सांस्कृतिक पुनर्निर्माण** - पुनर्जागरण ने भारतीय कला, साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित किया। इस समय भारतीय साहित्य में नये विचार और रचनात्मकता का प्रसार हुआ, और भारतीय कला एवं स्थापत्य में पश्चिमी और भारतीय शैली का संगम हुआ।
- **विज्ञान और तर्कवाद का प्रोत्साहनरू** - पुनर्जागरण ने भारतीय समाज में विज्ञान, तर्क और तात्त्विक सोच को बढ़ावा दिया। यह भारतीय समाज को पारंपरिक अंधविश्वास से उबारकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी।

❖ **निष्कर्ष**

भारत में पुनर्जागरण एक ऐतिहासिक और सामाजिक परिवर्तन का समय था, जिसने भारतीय समाज को नए दृष्टिकोण, सुधार और प्रगति की दिशा में मार्गदर्शन किया। इस काल में धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक सुधारों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों और असमानता के खिलाफ संघर्ष किया। महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा, और समानता के लिए उठाए गए कदमों ने समाज में बड़े बदलाव की नींव रखी। पश्चिमी विचारधारा और भारतीय संस्कृति का संगम भारतीय समाज में तर्क, विज्ञान और राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित करने का कारण बना। भारतीय पुनर्जागरण ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा दी और अंततः भारतीय समाज को एक नई दिशा में अग्रसर किया। इसने भारतीयों को आत्मनिर्भरता, समानता, और समाजिक न्याय की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी, जो आज भी हमारे समाज की दिशा और सोच को प्रभावित करती है। कुल मिलाकर, भारतीय पुनर्जागरण ने न केवल समाज में सुधार लाया बल्कि भारतीय राष्ट्रीयता और संस्कृति के प्रति गर्व और जागरूकता को भी बढ़ावा दिया।

❖ **संदर्भ-सूची**

1. चन्द्र, विपिन, 'भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास', पृष्ठ संख्या- 1-24
2. चन्द्र, विपिन, ' दैनिक सुलभ' , पृष्ठ संख्या-5
3. गोपाल, राम, 'लोकमान्य तिलक: एक जीवनी', पृष्ठ संख्या-186-88
4. नरौजी, दादाभाई, 'लेख, भाषा और भाषण', पृष्ठ संख्या-134-35
5. नरौजी, दादाभाई, 'पवर्टी इन इंड़िया' पृष्ठ संख्या-1
6. वही
7. चन्द्र, विपिन, 'भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास', पृष्ठ संख्या-07
8. धनपति, पांडेय 'आर्य समाज और राष्ट्रीय आंदोलन', पृष्ठ संख्या-4
9. वही
10. सेन, केशवचन्द्र, 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और हिंद समाज सुधार', पृष्ठ संख्या-15-16
11. मनुस्मृति, 'अध्याय-2 श्लोक-20'
12. पांडेय, बी. एन. 'द ब्रेकअप आॅफ ब्रिटिश इंड़िया', पृष्ठ संख्या-28